केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 32 पृष्ठीय

द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करे।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	तांक (अंकों में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	क (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15			कुल प्राप्तांक श		
16					

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
O.P. Awasthi Govt. R.P. Exc. School Panna Mob. 9893182097, Val No. 23135	Satyendra S.K. Mishra (U.M.S.) Govt. H. S. School Garhipadariya Mob. 9893375895, Val No. 23141

②

कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्र.1

(i) उ.→ (d) लिलिएसी।

(ii) उ.→ (a) ~~2~~% चूने का घोल।

(iii) उ.→ (b) कर्नाटक।

(iv) उ.→ (a) गिरीडिरोन।

(v) उ.→ (a) साइनोडॉन ~~डि~~ डेक्टिलॉन।

(vi) उ.→ (c) केला का।

प्र.2

उ. (i) → मशरूम

उ. (ii) → नीबू घास (lemon grass)

उ. (iii) → गॉडगिल समिति

उ. (iv) → डम्पी लेविल

उ. (v) → 18% व 21%.

उ. (vi) → ~~पेवेसिल~~ सोलेनेसी

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र.3

(i)→ सत्य

(ii)→ असत्य

(iii)→ सत्य

(iv)→ सत्य

(v)→ सत्य

(vi) असत्य

B

S

E

(i)→ गन्ना

(ii)→ आम

(iii)→ इकाइनोक्लोवा क्रसगेलाई

(iv)→ आइसोप्रोटूरॉन

(v)→ ~~सर~~ सरसों

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र.5

(i) उ.→ करक्यूमा लोन्गा ।

(ii) उ→ "सहकारिता एक ऐसा संगठन है जिसमें मनुष्य अपनी अपनी इच्छा से संगठित होकर अपने आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कार्य करते हैं।"

(iii) उ→ मशरूम के बीज स्पॉन कहलाते हैं।

(iv) उ→ अंगूर

(v) उ→ अमेरिका ।

प्र.6

उ.→ अलंकृत बागवानी के दो महत्व :-

(i) अलंकृत बागवानी मन को शान्ति प्रदान करती है अर्थात यहाँ बैठने से सुख का अनुभव होता है।

(ii) अलंकृत बागवानी से उद्यान की शोभा बढ़ती है।

(iii) अलंकृत बागवानी से प्राप्त पुष्पों का सजावटी पौधों के रूप में प्रयोग किया जाता है।

(5)

कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र.7 अथवा

उ.→ <u>तलवार सकर</u> – केले के वानस्पतिक प्रसारण में जब हम केले के सँकरी ~~क~~ पत्तियों का प्रयोग करके नए पौधे का निर्माण करते हैं तो यह स्वर्ड सकर्स या तलवार सकर कहलाता है।

<u>जल सकर</u> – केले के प्रसारण में जब ~~चौ~~ चौड़ी पत्तियों का प्रयोग करके नए पौधे का विकास करते हैं तो यह क्रिया वाटर सकर्स या जल सकर कहलाती है।

निम्न सकर्स विधियों में तलवार सकर उत्तम मानी जाती है।

प्र.8 अथवा

उ.→

फसल	वानस्पतिक नाम	कुल
बु	सिट्रस प्रजाति	रूटेसी।

प्र.9 अथवा

उ.→ <u>पोदीना</u>

<u>वानस्पतिक नाम</u> – मेंथा स्पीशीज या मेंथा आर्वेन्सिस

<u>कुल</u> – लैमिएसी।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. प्र.10

उ. ⇒ सिंचाई तथा जल निकास में अंतर —

	सिंचाई		जल-निकास
(i)	फसलों के विपुल उत्पादन के लिए उन्हें उनकी क्रान्तिक अवस्था में कृत्रिम रूप से जल देने की क्रिया सिंचाई कहलाती है।	(i)	भूमि की सतह तथा आन्तरिक सतह में विद्यमान बेकार एवं व्यर्थ जल को कृत्रिम रूप से बाहर निकालने की क्रिया जल-निकास कहलाती है।
(ii)	सिंचाई से भूमि का जल स्तर ऊपर उठता है, अर्थात् बढ़ता है।	(ii)	जल-निकास से भूमि का जल स्तर घटता है।
(iii)	सिंचाई का पानी अन्य घरेलू कार्यों में उपयोग लाया जा सकता है।	(iii)	जल-निकास का पानी अन्य घरेलू कार्यों में उपयोग लाने योग्य नहीं होता।

BSE

कुल अंक
BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र.11

उ.) खाद एवं उर्वरकों में दो अन्तर :-

खाद	उर्वरक
(i) इनका प्रयोग फसल की बुआई के 1-1.5 महीने पहले करते हैं।	(i) इनका प्रयोग खड़ी फसल पर करते हैं।
(ii) इनका प्रभाव मृदा में 2-3 वर्ष तक रहता है।	(ii) इनका प्रभाव तत्कालिक रहता है।
(iii) खाद का निर्माण कृषि फार्म में होता है।	(iii) उर्वरक का निर्माण कारखानों में होता है।

BSE

प्र.12 अथवा

उ.) ब्यासी — यह धान को बोने की एक विधि है, इसे छत्तीसगढ़ के किसान अधिक अपनाते हैं।

" सूखे खेत की जुताई करके इस विधि में भूमि को भुरभुरा बनाया जाता है तथा बीजों को छिड़क दिया जाता है (बोआई कर दी जाती है) से "खुर्रा बुआई" कहते हैं। वर्षा होने पर बीज अंकुरित होते हैं तथा नकी वृद्धि होती है, जब धान के पौधे 6 इंच के हो जाए तो इनकी ल से ब्यासी की जाती है। इसे धान की ब्यासी विधि कहते हैं व अंग्रेजी में इसे "Transplanting in site" भी कहते हैं।

⑧

योग पूर्व पृष्ठ

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

लाभ – (i) इस विधि द्वारा हाँथ से चलाई की जाती है तथा जहाँ पौधे अधिक लगे होते हैं वहाँ से कुछ पौधे निकालकर खाली स्थानों पर लगा देते हैं जिससे उत्पादन अच्छा होता है।

(ii) खरपतवारों की समस्या नहीं रहती।

प्र.13 अथवा

उ.⇒ अमरूद

B

(a) कुल → मीर्टेसी

S

(b) बहार → (i) मृग बहार – इसकी फल जुन-जुलाई में आते हैं तथा दिसंबर जनवरी तक फलत मिलती है।

E

(ii) हस्त बहार – इसके फूल अक्टूबर में आते हैं तथा मार्च-अप्रैल तक फलत मिलती है।

(iii) अम्बे बहार – इसके फूल फरवरी में आते हैं तथा अक्टूबर-नवम्बर तक फलत प्राप्त होती है।

(c) व्यवसायिक प्रसारण विधि – अमरुद में व्यवसायिक प्रसारण की निम्न विधियाँ हैं –

① लेयरिंग , ② रोपण हैं।

① ग्राउण्डलेयरिंग ② Air laying

भेंट कलम डिटैच्ड विधि

कुल अंक
मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र.15

सुखाना तथा निर्जलीकरण में तीन अंतर –

	सुखाना		निर्जलीकरण
(i)	इसमें सब्जियों एवं फलों को प्राकृतिक रूप से धूप एवं गंधक के धुँए में सुखाया जाता है।	(i)	इसमें फलों एवं सब्जियों को कृत्रिम रूप से ड्रायर (डिहाइड्रेटर) में निर्जलीकृत किया जाता है।
(ii)	इस विधि से सुखाने में अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है।	(ii)	इस विधि से सुखाने में कम समय लगता है।
(iii)	इस विधि से फलों एवं सब्जियों के रंग एवं गंध में काफी अन्तर आ जाता है।	(iii)	इस विधि से फलों एवं सब्जियों के रंग में कोई अन्तर नहीं आता।
(iv)	इस विधि में स्वच्छता कम रहती है तथा यह विधि अधिक स्थान घेरती है।	(iv)	इस विधि में खाद्य पदार्थ पूर्णतः स्वच्छ तथा जीवाणुरहित रहते हैं तथा यह विधि स्थान कम घेरती है।

BSE

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र.15 अथवा

उ. ⇒ पोटैशियम क्लोराइड — 60% पोटाश,

पोटैशियम सल्फेट — 48% पोटाश तथा 23-28% गन्धक (S) व

सिंगल सुपर फॉस्फेट — 16% फॉस्फोरस (P_2O_5)

प्र.16

उ. ⇒

फसल	वानस्पतिक नाम
(i) सोयाबीन	ग्लाइसीन मैक्स
(ii) अरहर	केजेनस कजान
(iii) मूँग	विग्ना रेडियेटा

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र.17 अथवा

उ. → वानस्पतिक प्रसारण के कोई चार दोष —

(i) वानस्पतिक प्रसारण से तैयार पौधों का जीवनकाल कम होता है।
(ii) इस प्रसारण से तैयार पौधे कमजोर होते हैं।
(iii) इस प्रसारण द्वारा पौधों की नई जातियाँ का विकास नहीं किया जा सकता।
(iv) वानस्पतिक प्रसारण द्वारा दूरस्थ भागों में पौध प्रसारण नहीं किया जा सकता।
(v) इनमें कीट एवं रोग अधिक लगते हैं इनमे रोगप्रतिरोधक क्षमता कम होती है।
(vi) सभी पौधों को वानस्पतिक भागों द्वारा नहीं प्रसारित किया जा सकता जैसे — ~~पपीता~~ पपीता, फालसा आदि।

BSE

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र.18 अथवा

निम्न की परिभाषाएँ –

(a) मार्मलेड – "यह एक विशेष प्रकार की जैली है जो नींबू वर्गीय पौधों जैसे – संतरा, माल्टा आदि से तैयार की जाती है 'मार्मलेड' कहलाती है।"

(b) स्क्वैश – "फलों के रस और चीनी को निश्चित अनुपात में मिलाकर जो पेय पदार्थ तैयार किया जाता है 'स्क्वैश' (शर्बत) कहलाता है।

स्क्वैश में 55% चीनी 33% फलों का रस व 1-2% साइट्रिक अम्ल पाया जाता है।

(c) जैम – "फलों के गूदों से जो खाद्य पदार्थ तैयार किया जाता है जैम कहलाता है।"

जैम में 70% से अधिक चीनी पायी जाती है।

(d) अचार – "खाद्य पदार्थों जैसे- फलों व सब्जियों को नमक, मसाले, तेल व सिरका मिलाकर परिरक्षित करना ताकि वह लम्बे समय तक खराब न हो इस प्रकार परिरक्षित एवं अर्धकिण्वित पदार्थ को 'अचार' कहते हैं।"

BSE

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र.19 अथवा

उ.→

पादप पोषण – "फसलों के विपुल उत्पादन के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा को उचित समय व उचित अनुपात में पूर्ति करना ताकि फसलो की उचित वृद्धि हो सके, पादप पोषण कहलाता है।

पोषक तत्वों की अनिवार्यता की कोई तीं कसौटियाँ –

(i) अनिवार्य तत्व की कमी से पौधों में विकार उत्पन्न हो जाते हैं।

(ii) अनिवार्य पोषक तत्व पौधों की उपापचय क्रियाओं में भाग लेते हैं।

(iii) जिस तत्व की कमी से विकार उत्पन्न होता है उसी तत्व के द्वारा उसका निदान होता है, चाहे कोई अन्य तत्व कितने ही समान लक्षणों वाला हो और चाहे आवर्त सारणी से कितना ही निकट क्यों न हो कार्य नहीं करेगा।

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र.20

गन्ने की खेती का वर्णन –

(a) वानस्पतिक नाम – सैकेरम ऑफिसिनेरम

(b) बीजदर – 35,000 – 40,000 तीन आँख वाले टुकड़े प्रति हेक्टेयर की बुआई हेतु।

(c) बीजोपचार – गन्ने के बीजों को बोने से पूर्व एरीटान 0.25% के घोल अथवा एगलाल 0.5% के घोल में पाँच मिनट तक डुबाकर रखें।

(d) पकने की पहचान – (i) गन्ने की वृद्धि रुक जाती है।
(ii) गन्ना बजाने पर धातु की भाँति बजता है।
(iii) गन्ना तोड़ने पर आसानी से टूट जाता है।

B
S
E